

## Vibrant Pushti



"जय श्री कृष्ण"

निरखुं जिस तरफ द्रष्टि उठाके पाऊं मेरे साँवरिया

साँवरिया मेरे नयन बसिया

साँवरिया मेरे चितचोर रसिया

पलकें उठाऊं पलकें झुकाऊं नजर जहां जहां फहराऊं

अश्रु बहाऊं इंतजार करूं यादों में कहां कहां खो जाऊं

नयनों में मेरे साँवरिया

निरखुं जिस तरफ द्रष्टि उठाके पाऊं मेरे साँवरिया

अपलक निहालुं पलक न खोलुं तरंगो से क्या क्या कृति रचाऊं

चक्षु जगाऊं दिक्षु दर्शाऊं तन मन द्वार से तहां तहां पहुँचुं

हर दिशा में मेरे साँवरिया

निरखुं जिस तरफ द्रष्टि उ

साँवरिया

साँवरिया बसिया

साँवरिया चितचोर रसिया



की न्यारी

की रीत निराली

सर्वे

सर्वे

मस्ती

में ३

खिले

ही : ही :

ही सर्जन र ही :

में प्रियतम : में ३

में ब्रह्म रंग में श्याम

यही : मैं श्याम की

यही : मैं प्रिये प्रिया प्रियतम की

बिना : मैं र

ही : मैं र साँवरिया





क्या क्या तुम्हें हे प्रभु!

लीला : दर्शन दिखलाये

ज्ञान : प्रकटाये

हमारी

रीत :

तुम्हारे में ३

में तू साँवरिया कृष्ण

ही : प्रियतम प्यारा!

गोवर्धन, र , श्रीनाथ त



श्याम

विरह

बिछड़े आत्म

कितना जन्म

क्यूँकि

श्याम श्याम

श्याम कहीं कहीं

विरह

सों की श्याम प्रियतम

निकट नहीं

निभायेंगे प्रीत ह



नजरिया नाचें

श्याम प्रीत न विलास

तिरछी नजरिया से तीर चलाये

अठखेलियाँ

श्याम प्रीत न विलास

चटक चुनरिया फर फर लहराये

श्याम

श्याम प्रीत न विलास

हिचक हिचक अंग अंग नाचें

हिलोरें भ

श्याम प्रीत न विलास

सुधबुध खोयी श्याम श्याम होयी

श्याम श्याम श्याम भिगोयी

श्याम प्रीत रं में में श्यामा

श्याम प्रीत न विलास





साँवरिया दर्शन :  
तोरी नगरीयां

भवरीयां

ही : ही : प्रीत प्यास

साँवरिया ही : प्रियतम



"प्रियतम" लिखते ही :

"प्रियतम" प ही :

"प्रियतम" सु ही :

"प्रियतम" स्मरण ही :

"प्रियतम" स ही :

क्या

मैं हूँ उनमें

निराला परिवर्तन जाग ?

सर्व बिंदु ,

केन्द्र से ,

मैं आकर्षण : खिंचता

मैं गति खिलती

,

आत्मा स्वरूप के प्रज्वलित करता ,

लिए

प्रियतम!

गहरी :

गहरी :

गहरी तीव्रता

गहरी :

विरह

क्यूँ

में

प्यार यही निल में

यही में

धैर्य यही निष्ठुर में

यही में

सिंचन यही : वनस्पति में

यही अविश्वास मा में

! प्रभु! प्रभु! प्रियतम मेरे प्रभु!

प्रीत की रीत कितनी निराली

उनकी रीत

उनकी

मिलना

बिछडना

खिले

दिल

निकट

प्रीत व





नहीं : तुम्हें तो नयनों में तस्वीर  
नहीं : तुम्हें तो स्पर्श पाते  
नहीं मिला तुम्हें तो ख्यालों में मिलते  
क्या यही हमारी प्रीत रीत ?

की कितनी में हमें ६

कितने में हमें कहीं कहीं :

साँवरिया!

मैं र ही तुम्हें पाउं

विचार की शुद्धता

कर्म की पवित्रता

स्पंदन की :

अक्षर की योग्यता



निखारत

दिवाने

अश्रु

होसठ पंखुड़ियाँ

हस्त उंगलियाँ

उर्मि हो

प्रीत

अर्पित हं



श्याम

नहीं

हारत हमसे तो कुछ करत हमसे

रीत निराली निभाते

श्याम

जीत जीत कर थक गये

फिरभी

ही खेलें

निरंतर

नहीं पता पर उन्हें पता

क्यूँ

क्या

मुस्काये

श्याम



पिया :

जन्म जन्म की प्रीत ६

पिया :

निरखे      ज्योत आत्म

मिलन की :

बिखराये

बावरी

श्यामा श्याम श्यामल

श्याम      श्याम





सूत्रों से            तुम्हें  
की    रीति से ।        तुम्हें  
अक्षर            तुम्हें  
                         तुम्हें

तुहीं :            में र  
तुहीं :            मुझमें त

!

मेरी प्रीत र

मेरी

विरह    रुलाऊ

मेरी आत्म    मिलाऊ

हाथों :    खिलाऊ

नयनों

होठों :

ख्यालों में उ

बिखेरती

नयनों में उ

हाथों में ह

प्रीत ६

कहीं

विरह



कान्हा

कान्हा! लिए ,

कान्हा            गिरिराज            निकुंज  
हृदयेश्वरी के लिए

जुल्फों

की :

सांसों की :

दुपट्टे

दिल की :

हस्त

हर्ष उल्लास

प्रीत प्यारी का प्यार पिलाया



कितनी लीला साँवरिया की

किरण " श्री कृष्ण"

" श्री कृष्ण"

की बास्प " श्री कृष्ण"

वनस्पति : पत्ते " श्री कृष्ण"

चंद्र किरण " श्री कृष्ण"

टीम टीमाके " श्री कृष्ण"

फूलों खिलते खिलते " श्री कृष्ण"

स्पर्श से " श्री कृष्ण"

अलौकिक लिए

" श्री कृष्ण"

" श्री कृष्ण" मिलाता

" श्री कृष्ण"

! कृष्ण!

! मेरी !

! वल्लभ!



कृष्ण कृष्ण क्यूँ                      में ६

कृष्ण कृष्ण क्यूँ            सांसों में ८

कृष्ण कृष्ण क्यूँ            होठों १

कृष्ण कृष्ण क्यूँ            कर्णों में ८

कृष्ण कृष्ण क्यूँ            कदमों १

कृष्ण कृष्ण क्यूँ            विरह १

कृष्ण कृष्ण क्यूँ                      में १

कृष्ण कृष्ण क्यूँ            पलकों १

कृष्ण कृष्ण क्यूँ            नयनों में ३

?

?

प्रियवर श्रीकृष्ण!



नहीं कितनी की डगरियाँ

की

मुझमें तू कितने खिले वह प्रीत र तेरी  
प्रीत की

क्यूँकि

तेरी मैं तू की

तेरी की

मुझमें तू साँवरिया!

की

रिश्ते

मैं मैं तू मैं तू

क्या क्या

परब्रह्म      में ब्रह्म लीन :

में साँवरि

प्रिया है      में प्रियतम

में त

श्याम      में श्यामा



खिंचत                      की                      मिलाने

प्रिय को मिलने

दिल

दर्शन की तीव्र प्यास

सर्वस्व :              दिया

श्री हरि





दिन

दिन

नैन से जागत जगत जानत

रीत :

रीत :

दिन

नैन को भाये नैन में बसाये

में त

दिन

नैन से नैन मिले उन साँवरिया से

साँवरिया

साँवरिया

दिन

नैन नैनन की यही है धर्मिया

साँवरिया

कर्म : जन्म सुधियारा

दिन



"कन्हैया" हृदय में बिराजते  
"कृष्ण" ब्रह्मांडो में बिराजते  
"श्याम" बाह्य में बिराजते  
" " में बिराजते  
" " उन्माद की गति में बिराजते  
"गोविंद" विरह सिंचन में बिराजते  
" " विशुद्ध की रीत में बिराजते  
" " की तीव्रता में बिराजते  
"गिरिधर" बिराजते  
" " की मुक्ति में बिराजते  
" " सृष्टि की में बिराजते  
" " प्रीत की लीला में बिराजते



अक्षर

तेरी तस्वीर

स्वर

तेरी

ही मेरी प्रीत र

ही :

ही :

ही : प्यार

में त

में

में ३ करु जन्म में  
ही सारी सृष्टि  
ही प्यार खिले सारी सृष्टि





ख्यालों के खयाल नहीं :

ख्यालों में :

कहीं : खयालों में :

प्रीत है की " "

ख्यालों की

मैं तू चली :

" प्यार चोरी :

मैं तू डोरी :

लिया खयालों की डोरी :

कहीं :

चोरी चोरी तुम्हें खयालों में तू रहेंगे



में र श्याम

पलक झूकावु तो मलक मलक दिसे

बांकी में र

श्याम

में र श्याम

लोरियाँ सुनाऊँ मधुर अधर छलके

झूलणिया पुकारू

में र श्याम



कितने  
झझुमें कितने  
खुली कितनी  
तुटी कितनी  
शहीद कितने  
कितनी  
हमारी ।

किशोर  
संस्कृति  
चित्त का  
मिलत  
जन्म की  
खिलत प्रीत की  
यही की  
आत्म परमात्मा

क्या

ख्याल

प्रीत आत्म की

निकट ही :

विरह में

ज्वाला ज्योत

श्वास उच्छ्वास की गति

कहीं

यही ही : मिलन की



बिन छिन -भरि,

बिरहा-ः दही री।

बिन -भरि,

-नदी बही री।

प्रीत-केलि घनश्याम -भरि,

आत्म-ज्योत गही री।

नहीं पलछिन बिछड -भरि, अद्वैत जन्म नही री।

श्यामा-श्याम की रीत प्रीत-भरि,

-नदी री।

बिन छिन -भरि,

बिरहा-ः दही री।

श्याम! बिन जन्म जन्म कल्प

प्रीत र बिना छिन ,

तुम्हारे बिरह में र

प्रियतम रस बिन

विरहाग्नि में ह

, हमें त



जन्म

आश्वासन

प्रीत किरण

में व

दिला

कहीं कल्पों से      बिछडे      उनमें तेरी  
की

मिलन



में जन्म में

वल्लभ पुष्टि रीत प्रीत ब

तनुनवत्व शृंगार

गिरिराज ; स्पर्श से नित्य शर स्वीकार

अष्टसखा स्वर चिंतन

वैष्णव आत्म



श्याम

श्याम

भक्त भक्त लीला :

चित्त लूट

हरि हरिदासवर्य परिवर्तित

पुष्टि रीत ही पुष्ट परिक्रमा :

"श्री हरिदासवर्य गोवर्धन"

पुष्टि भक्ति





सुंदीर श्याम

दिल में हृ जन्म विरह

प्यार

घनश्याम

काली

मितवा

में साँवरि



चूडियाँ

पिया मिलने

प्रियतम मिलने

पिया : मिलने

प्रियतम मिलने

पिया :

प्रियतम बुत





दर्शन क्यूँ खिंचे श्रीकृष्ण व

क्यूँ श्रीराधा व

जिज्ञासा क्यूँ श्रीकृष्ण में

तीव्र क्यूँ श्रीराधा में

लीला क्यूँ श्रीकृष्ण से

क्यूँ श्रीराधा र

क्यूँ प्रकटे श्रीराधा कृष्ण

विरह क्यूँ उद्विग्न हो श्रीराधा कृष्ण

प्रीत ६ क्यूँ श्रीराधा कृष्ण

पुष्टि रीत क्यूँ श्रीराधा कृष्ण





पीली पीली मिट्टी

पीली पीली हल्दी

पीली पीली

प्रीत विरह की रीत

प्रीत मिलन

पवित्र अग्नि

कयूँकी

सुनहरी किरण पिला

प्रीताचल 3

प्रियतम का

पिया तिलक

प्राण।



रुकने      ध्यान

आत्म      !

,      फिर आयेंगे

निकलना

पाया दर्शन पीया पिया की प्रीत

पिया :      बिछडना :

जगतकी अठखेलियाँ

पिया :      निभाना :

नाथद्वारा के नाथ वचन है मेरा यह जीवन

पुष्टि ज्ञान ।

में र      स्वीकारना

यही प्रार्थना र

मुझमें ॐ प्रीत ॐ

घनश्याम

घनश्याम

घनश्याम

श्याम

मुझमें पुष्टि रीत सजायी रे वल्लभ श्री नाथ ने

संस्कार

वल्लभ श्री ॐ

वल्लभ श्री ॐ

विठ्ठल गो

मुझमें अंतरंग पुष्टि लीला जतायी रे गोकुल गोपाल ने

हरिराय

मुझमें व्रजरज बसायी रे यमुना गिरिराज ने

गिरिराज

अष्ठसखाने





बंसरी की रही

विरह अग्नि में प्रीत की ,

में ए ,

में र ,

में बिजली,

पत्थरों में इ

कहीं प्रश्रयात नहीं दिखाई दी

व्याकुल चित्त में ए ही रही - ! ! !

दिशे क्या ?

!

!

!

कर्ण र !

!

!

!

द्रष्टि राध!

!

क्रिया रा !

में र !

पत्ते !

में र !

में र !

किरण में र !

में र !

में र !

में र !

कितने विहवळ . विवश !

पहली : कि नहीं : ?  
विडंबना?

नहीं : कि बिन श्याम।

श्याम प्रियतमा :

पत्ता हिले !

की !

की !

की गिरावट !

की !

! श्यामा बिन श्याम

यही सर्वे में र निकले ! ! !

! कितनी भेदी - !

में र !

?

?

! ! !

नहीं दिशत

नहीं :

नहीं :

की :

मेरी कृति की :

कहीं : किरण प्रसरे

कहीं : प्रसरी

कहीं :

कहीं :

कहीं :

कहीं :

कहीं :

कहीं :

कहीं उठी  
संयुक्ति :  
रही मिलन

पिया प्रीत स्वरूप  
व्याकुल दिशत  
प्रियतम प्रीत  
मिले

दिल  
आत्म  
प्रीत ३



ऐकात्म प्रकटे

कृष्ण कृष्ण

यही प्रीत र



कहीं : पलें

कहीं : स्थलें

कहीं : रचेंले

में तुम्हें देख

स्थल में तुम्हें जा

में तुम्हें पहा

ही :

ही :

ही :

अच्छा!

पलकों में दृ

स्थल में ब

में दृ



ख्यालों के ख्वाबों में ऐ                      की    ख्याल  
ख्यालों के            में ऐ                      की    ख्याल खुद्दार  
ख्यालों के खजानों में ऐ                      की    ख्याल  
ख्यालों के            में ऐ                      की    ख्याल  
ख्यालों के            लिखना    की    ख्याल खिताब



श्याम नैनों में

मैं ँ नहीं :

क्या करु

पलक खुले तो डर मोहे लागे

श्याम कहीं :

श्याम कहीं :

मेरी

श्याम

मेरे प्रियवर को भी मुझसे उलझन

किसको :

लिया पलकें ँ

दिया मैं



दिया

पर न भागा वह नैन से मेरे

में

श्याम लिया ही





जुल्फें बिखरी तो

बादलों

बिजली से

दिल में तेरी

साँवरिया



कितने      फिर

कितने

में ३      फिर

तस्वीर

दिल में ६      फिर



खेलें ह

तेरी यादों में खुद लूटाऊ

तेरी उम्मीद में र

बिताऊ

खेलें ह

सांसों के तार कीर्तन सुनाऊँ

की

रीति से :

संवारूँ

खेलें ह

तस्वीर से तु तन चुराये

दर्शन र

प्रीत की रीति जत

खेलें ह

दिन घुमाये रात जगाये

ध्याये

विरह

खेलें ढ

द्वार तेरा ढूँढ नहीं पाऊ

प्रीत 3

आत्म ज्योत मिलाने

खेलें ढ

! ! ! !





! प्रभु! प्रिये!

हृदय प्रीत की

प्यार

निराले निकट ही :

विरह की में त





यादों :

नयनों : अशक

होठों :

अक्षर जख्म लिखता

क्या यही : प्यार

उन्हें न :

ही : प्यार

उन्हें जग ही :



मिलाता  
खिले ज्योति

में ह साँवरिया  
श्वास



खुली पलकों में ढ नयनों

में ३ में १

मेरी में १

पलकें ३ उन्होंने

में ३ दिल में १

प्रीत वे में ढ

सों की उष्मा में र



किरण खिले

प्राण त्

खुडि

दिल

प्रीत वे





!

रही कृष्ण प्रीत की  
प्यास रही कृष्ण की  
रही कृष्ण दर्शन की  
कृष्ण  
रही कृष्ण की  
कृष्ण विरह  
कृष्ण मिलन





श्यामा

श्यामा

श्यामा

श्यामा में ३

श्याम

श्याम श्यामा

इसलिए

श्यामा



नन्हा      प्यारा

मैं त              उन्हें मिलने

बैठी :              बिछाके

प्यारे

मैं त              वाली :

प्रियतम देखें

क्या      क्या              खेलें

प्रीत खिलें विरह अगनकी

मैं मुस्काया

गहरी :

प्रि दुपट्टाई

प्रीत विरह की प्यास

मेरी

इसलिए

कृष्ण कन्हाई



बिखरे बिखरे

कहीं खिलें

खिलते खिलते कहीं

सिंचे

सिंचे सिंचे प्रीत रं प्रकटे

प्रकट प्रकट दिल में विरह

प्रियतम दिल

मिलन

तेरी तस्वीर दिखाये

दिखाये दिखाये में ह लिपटाये

लिपटाये लिपटाये में र

साँवरिया

प्रीत में ब नहीं

में ह चिपकते नहीं

में प्राण ब नहीं

तेरी में है साँवरिया!

विरह में

दिल

नहीं





पंछी :

आशियाना में

में

में

क्या

हस्ते हस्ते

आशियाना में तुम्हें

स्वतंत्रता

में

मुझमें नर्तनता बिखर

में तुम्हें

मुझमें मातृत्व

सानिध्य तुम्हारा

प्रीत लीला

प्यारा

पंछी :

प्रीत लीला!

प्यारा!

!

- !

प्यारा

न्यारा

कृष्ण कन्हैया दिल साँवरिया

कृष्ण में

कृष्ण में

कृष्ण खिलता में

कृष्ण साँसों में

कृष्ण में

कृष्ण ख्यालों में

कृष्ण इन्द्रियों में

कृष्ण प्रीत व

की उर्जा में

यही : कृष्ण!

यही : कृष्ण!

यही : कृष्ण!



कान्हा!

शब्द

में त प्रीत की में लिपटाते

क्या

में ह

क्या तुम्हारी

आत्म की ज्योत में र

! कितना प्यार तुम्हारा

क्षण प्रीत की रीत निभाते



निकट

रीत तुम्हारी

निकट करें

फिर

कहीं ।

मेरी साँवरि! रुठो





मंदिर में ह

कर्म रे

निरंतर

तेरी

गोविंद!

तुटी



फरियाद

गिनता

रुंद रुंद

यही रीत प्रीत की

! ? क्या ?



होली : की रीत

प्रियतम रंग से तन मन रंगे

पुष्टि रं

गिरिराज

वल्लभ श्याम

कंगन खनकाये पायल नचाये

व्रजरज

पिचकारी

बिरंगी

पिया

प्रीतम रं



क्या

ही ।

क्या स्नान

ही ।

क्या करु

ही । सौंदर्य सलौ

क्या

ही ।

क्या

ही । सामग्री

क्या

ही ।

क्या न्योछाऊ

ही । न्योछैया

क्या रीत शिखाऊ

ही । कृतज्ञा

क्या खिलाऊ

ही ।

क्या

ही ।

क्या मैं बिनती करु

ही ।

क्या प्रीत त

ही । प्रीत त

क्या

ही । दिल

क्या क्या रीत पुकारु

ही । कृष्ण कन्हैया



श्याम

गोविंद

साँवरिया



वही :

यादों में र

नहीं :

में

यादों में

खिंचे :

उनकी यादों :

में

मिलने की :

प्रिय साँवरिया :



कहीं बादलों

कहीं बालों

कहीं :

कहीं उत्कृष्ट निम्न विचारों

दिल कहीं प्रीत उर्मिओ से

यही की रीत क्या

निहारते तेरी

!

!

!

!

!

दिल खिलें!

की रीत?

?

?

ख्याल

ख्याल

आत्म परमात्मा की

रीत निराली

खिंचे

करें ख्याल

करें र

फिर हमें ब

फिर हमें ख्याल

रीत ब्रह्मांड की

रीत

सोचों :

वियोग :

खिंचे :

खेलें





स्पंदन

स्पर्श

प्रीत

यही :



श्री ॐ

परब्रह्म से ब्रह्म

भक्त भक्त

भक्त श्याम

यमुना पुष्टि प्रीत बूँद बरसाये

गिरिराज ६ स्पर्श करा

अष्टसखा पुष्टि सिद्धांत

सिधाये

धन्य धन्य आत्म वैष्णव हो जाये

लीला : वैष्णव

पुष्टि प्रीत ३

एकात्म ब्रह्म परब्रह्म संपूर्ण ६

श्री श्रीनाथजी हृदयस्थ हो ३

फूलों : सिंहासन

फूलों : तिलक

फूलों : मंदिर

फूलों :

फूलों :

फूलों : निकुंज

फूलों :

फूलों : माल्या

जिसमें पक्ष प्रियतम प्यार

तिरछ तिरछ नचायें

चित्त चोर

प्रीत रं संस्कार

खेलें हैं होली

मैं ॐ रुम

चुनरी खेंचे

होठों : प्यार



मेरी            में  
निकल            की  
यही :            खिलें  
स्थिर ३

रिश्ता है :            रीत :  
की            प्रीत व  
की            विरह

मैं ख्याल ख्याल    अनित्य अनित्य से

सर्वस्व समर्पित क



मैं ढें                      मैं विचरता

लिया न्योछावर

नहीं

इसलिए              कृष्ण कन्हैया

मैं र                      की

नहीं मेरी              रीत

तुही :              मेरी

साँवरिया पुकारु बावरीया :

निभाना प्रियतम हो

तेरी प्रीत है                      रूप

मेरी रीत :      विष विषयों रस रूप

विष

कृष्ण    न्हैया मैं ढें

प्यार!

स्फूरता - " "

- "प्यारा"

रीत दर्शाती है - "दिश "

- "प्रिय विरह"

- होंगे?



पिया मिलन की

पिया की

विरह प्रीत चित



पिचकारी श्याम      व्रज गली

व्रजनारी खे      बिरंगी होली

!      !

गौरी      छोरी

श्याम      गौरी

दोनों खेलें :

नहीं      मैं :      ब्रिज :

!      !

निराला

रंगों :

नहीं      मैं :      ब्रिज

ब्रिज बा

अलबेली

प्यार

श्यामा श्याम श्याम श्यामा

प्यार

! पुष्टि रं  
कान्हा हाथों में व  
पुष्टि ब  
भक्त

होली : त्योहार

तिरछे की

कहीं :

बिरंगो :

आत्म प्रीत व

हमें र



लिया

लिया मैं रं

दिया प्रीतामृत न

रसिया

मेरी चुनरी

मेरी चुनरी

पिया प्यार

रसिया

मेरी चुनरी

पिया

रसिया

मेरी चुनरी

पिया

रसिया

मेरी चुनरी

पिया

प्रीत ३

सिया



कान्हा!

नहीं : बिन होली :

तेरी बाँकी :

नहीं तोरे बिन होली :

सांकरी :

ब्रज गली गली :

नहीं तो :

नहीं तोरे बिन होली :

आक्रंद

विरह में दर्द :

नहीं तोरे बिन होली :

कान्हा!                      री प्यास

कान्हा!                      हमारी

कान्हा!                      ही हमारी प्रीत

!



तेरी तिरछी नज में रं

की मैं लूटी ही :

की मैं वारी ही :

श्याम                      प्यार

की मैं साँवरि      ही :

तेरी तिरछी नज में रं

की मैं लूटी ही :

दिपक                      विरह

की मैं त                      ही :

तेरी तिरछी नज में रं

की मैं लूटी ही :

बारिश

की मैं अ                      ही :



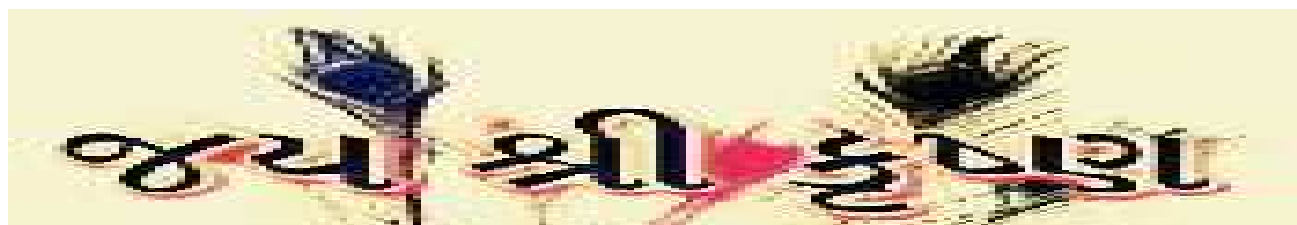
तेरी तिरछी नज में रं  
की मैं लूटी ही :

की मैं र की ही :  
तेरी तिरछी न में रं  
की मैं लूटी ही :

मुस्कान

की मैं त  
तेरी तिरछी न में रं  
की मैं लूटी ही :

की मैं वारी ही :



पिचकारी सख मारी  
कान्हा होली  
मुखडा हरखाये तन नाच नचाये

कान्हा होली  
बंसी बजाये सखियों बुलाये  
पिचकारी

कान्हा होली  
चुनरी उडाये कान्हा को सताये

कान्हा होली  
भर पिचकारी सखियों ने मारी

कान्हा होली



तितली उ

ही : दिलका में

ऐसा ही मेरे मनका तरंग उडे फूल चमन में

दिलका

नाचें

गाये प्रीत संदेश साँवरे प्रियतम से

दिलका

पुकारे प्रेम संदेश राधे प्रियवर से

तितली

तितली

चुमें प्रीत रस गोविंद प्रिय आत्म से

होली : व्रजनार

होली :

हाथों में लिया

होली :

नंदगांव का छोरा ढूँढे

गली गली कान्हा

कान्हा

होली :

रंग रंग पिचकारी से उड़ाये

निकाले

कान्हा

ली :

गुसपुस गुसपुस इशारा करे

प्यारे

प्रीत रं            कान्हा

होली :

गोप गोपी की होली निराली

दिल

हमें रं            कान्हा

होली :





की बजरिया हमें  
खिल खिल नगरीया शर्मसे हमें  
पलछिन पलछिन  
अठखेलियाँ की नजरिया हमें  
होली :  
प्रीत रं में  
साँवरिया : प्रीत न में  
में प्रिय प्रियतम व में



मन के तरंग से रंगु

रसिया

काजल नयन से श्याम रंग रंगु

रसिया

अंतर भाव से तन को भीगो दुं

प्रीत ए

रसिया

रसिया



निहालें कान्हा

निहालें कान्हा

निहालें कान्हा

चक्षु निहालें कान्हा

निहारें कान्हा

निहारें कान्हा

निहारें कान्हा

दिल निहारें कान्हा

निहालुं ताहीं कान्हा

कान्हा कान्हा कान्हा कान्हा



"कृष्ण लीला"

क्या रीत ?

क्या गति ?

क्या कृति ?

क्या सृष्टि श ?

क्या द्रष्टि थी?

क्या प्रकृति थ ?

क्या शक्ति ?

क्या जुष्टजू ?

क्या तुष्टि श ?

क्या वृष्टि श ?

क्या प्रीत श ?

क्या पुष्टि श ?

हर विचार को खिंचे



अक्षर खिंचे

स्वर खिंचे

खिंचे

खिंचे

खिंचे

खिंचे

ज्ञान : खिंचे

ध्यान खिंचे

खिंचे

स्मरण खिंचे

खिंचे

खिंचे

किरण खिंचे

खिंचे

खिंचे

खिंचे

प्रतिबिंब को खिंचे

निधि को खिंचे

खिंचे

खिंचे

खिंचे

सत्य खिंचे

शुद्धता खिंचे

प्रश्न खिंचे

संकल्प खिंचे

आज्ञा खिंचे

खिंचे

तनुनवत्व खिंचे

खिंचे  
यही : लीला कृष्ण की  
रुलाये  
निभाये



विरह

अश्रु की      प्यास

यादों की

मिलन      की      भरी

तेरी प्रीत ३

साँवरिया      साँवरिया



ब्रज की कहीं गली

ब्रज की कहीं चप्पे चप्पे

ब्रज की            में हूँ

ब्रज                में हूँ

कहीं

श्याम!

?

में हूँ

चप्पे चप्पे            में हूँ

गली गली की        में हूँ

तुम्हारे

गली में मैं -

चप्पे में मैं - कान्हा

में मैं - श्याम



में मैं - कृष्ण

! !

! प्रिये भक्त ! !

खेलें र

प्रेमानंद व

प्रीत 3



प्यार ही

प्यार ही निखरती

प्यार ही खिलती

प्यार ही

ही कि प्यार नहीं

प्यार लिए

प्यार

फिर क्यूँ

कि प्यार

कि प्यार

प्रकार प्यार यही

" कृष्ण"

दिल

कहीं ।

क्यूँकि ।

में ज्ञान ।

में भक्ति

में र

में धर्म र

में आत्म ज्योति प्रकटायी

में ह

खाली ।

खाली ।

!

क्यूँ

विष :

डगरीयाँ : नजरियाँ

साँवरिया

में १



प्रकट                    विरह की होली  
ज्योत मिलन की  
प्रीत की रीत  
उच्छवास

निंद

चित्तचोर साँवरिया  
जन्म जन्म होली में त

लिय

तिरछे

मिलन



रंगों में रं प्रीत वे

! साँवरिया प्रकृति रंग

जन्म जन्म

ही : आत्म तेरी प्रीत व



दिया प्रीत की

दिया आत्म की

ज्योत दीपक की

मिल की



सकारात्मक पुष्टि स्पंदन

सचित्र

संस्करण भाग - 3

सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशक: Vibrant Pushti - Vadodara



Vibrant Pushti

53, सुभाष पार्क सोसायटी

संगम चार रास्ता

हरणी रोड - वडोदरा - 390006

गुजरात - India

Email: vibrantpushti@gmail.com

Mobile: +91 9327297507







**Vibrant Pushti**